CONTEMPORARY INDIA AND EDUCATION - C-2
समकालीन भारत और शिक्षा

बिहार में शिक्षा का सामाजिक संदर्भ :⇒

आजकल प्रचलित आर्थिक विकास के लक्षणों की प्रमुख मापदंडों के आधार पर बिहार को पिछड़ा राज्य माना जाता है, तथापि इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि वृद्धि और विकास की यहाँ जबरदस्त संभावना मौजूद है। राज्य के अनेक समाज विज्ञानियों के लिए इसकी व्याख्या करना आसान नहीं होगा कि देश के अर्थतंत्र और बेहतरी के लिए बिहार कितने अप्रत्यक्ष तरीकों से योगदान कर रहा है। बिहार के लोग विभिन्न क्षेत्रों और देशों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं, लेकिन अपनी धरती पर ही कुछ चूक रह जा रही है, जिसको जाँचने और सुधारने की जरूरत है। शिक्षा इस स्थिति को ठीक करने का सबसे तर्कसंगत उपाय साबित हो सकती है।

बिहार में शिक्षा के समकालीन संदर्भ को निम्नलिखित तरीके से शृंखलाबद्ध करना उपयोगी हो सकता है।

1. बिहार में अभी भी सामाजिक सोच पर जाति आधारित श्रेणीक्रम की गहरी पकड़ है जो जीवन को और समाज के तमाम पहलुओं को प्रभावित करता है, गरीब तबकों को शामिल करने वाली राज्य संपोषित संस्थाओं की स्थिति जर्जर है।

2. ऐसी समान व्यवस्था में शैक्षिक संस्थाओं का भी श्रेणीकृत उभरा है जो विद्यमान असमानताओं को जारी -

Scanned with CamScanner

रखने में सहायक है।

3. बिहार में गरीबी और आर्थिक पिछड़ापन का व्यापक विस्तार है जो अनसुलझे सामाजिक तनाव और खुलते विक्षोभ की ओर अग्रसर है। खास कर ग्रामांचलों में जहाँ अभी भी नब्बे फीसदी आबादी रहती है।

4. विरोध अव्यवस्था और अक्सर अपने आप में मूल्य से बन चुके हैं तथा व्यवस्थित और संतुलित सामाजिक रूपांतरण की राह में अवरोध पैदा कर रहे हैं।

5. दूसरी तरफ, देश वैश्वीकरण और प्रौद्योगिकीय परिवर्तन के युग में प्रवेश कर रहा है और प्रारंभिक शिक्षा वादा से माँग की ओर बढ़ते हुए संपूर्ण मौलिक अधिकार के रूप में विकसित हो गई है।

उपर्युक्त स्थिति उथल-पुथल भरे समाज की द्योतक है जहाँ सामाजिक हस्तक्षेप अत्यावश्यक है और इसीलिए राज्य के लिए पाठ्यचर्या बनाते समय इन कारकों को नजर में रखना जरूरी है। सौभाग्यवश राज्य में प्रचुर सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संसाधन उपलब्ध है, जिनका इस्तेमाल इसको मौजूदा दलदल से निकालने के लिए किया जा सकता है, उत्तर बिहार के पूर्वी हिस्से में जहाँ अति समृद्ध मिथिला संस्कृति विद्यमान है। वहीं पश्चिम की तरफ भोजपुरी भाषी और क्षेत्र का बड़ा भाग है जो राज्य के बाहर तक फैला हुआ है।

Scanned with CamScanner

मगध अंचल की अपनी भाषा और संस्कृति है और वैसी ही स्थिति भागलपुर के इर्द-गिर्द के क्षेत्र की है। जहाँ अंगिका बोलचाल की भाषा है। हर अंचल में कला की विभिन्न शैलियों का अपना समृद्ध भंडार है। संस्कृति व ऐतिहासिक पहचान का अपना बोध है। एक अर्थ में कहें तो सांस्कृतिक बहुलता के अपने खुद के संस्करण वाला बिहार भारत का एक छोटा प्रतिरूप है।

राजनीतिक चेतना के लिहाज से बिहार का समाज चौकस और सक्रिय है। हालांकि उसका ढंग हमेशा जिम्मेदाराना नहीं रहता। लोगों की ऊर्जा को दिशाबद्ध करने की जरूरत है और विद्यालय ऐसे प्रशिक्षण के लिए सबसे उपयुक्त स्थल साबित हो सकते हैं।

Scanned with CamScanner